राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति

पी.जी. एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डिप्लोमा कोर्स)

2025-2026

नई शिक्षा नीति–2020

राजस्थानी भाषा साहित्य शोध केन्द्र

जैन विश्वभारती संस्थान

लाडनूँ–341306 (राजस्थान)

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति

पी.जी. एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डिप्लोमा कोर्स)

समय अवधि–01 वर्ष

निर्धारित योग्यता : स्नातक

उद्देश्य

एक वर्ष की समयावधि में राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति के संबंध में आवश्यक अध्ययन, भाषा अनुवाद का ज्ञान करवाना।

उपयोगिता

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर, कर्मचारी चयन आयोग, जयपुर परीक्षाओं तथा अन्य प्रतियोगी राजस्थानी भाषा, साहित्य, लोक साहित्य एवं संस्कृति संबंधी अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण। राजस्थानी भाषा और साहित्य का प्राथमिक ज्ञान जन सामान्य हेतु अनुवाद कौशल में दक्षता।

1	2	3	4		5	6	7
Semester	**Code**	**Name Calture**	**Total Lecture**		**Lecture per week**	**CREDIT**	**M.M.**
I	S-01-RAJD 01	1. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य 2. राजस्थानी लोकसाहित्य एवं संस्कृति	90	सैद्धान्तिक–60 प्रायोगिक–30	6 (4+2)	6	(70+ 30)= 100
II	S-02-RAJD 02	1. राजस्थानी भाषा दक्षता 2. (अ) राजस्थानी संत साहित्य परंपरा (ब) राजस्थानी जैन साहित्य परंपरा	90	सैद्धान्तिक–60 प्रायोगिक–30	6 (4+2)	6	(70+ 30)= 100

पाठ्यक्रम

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम–प्रश्न पत्र

सेमेस्टर–1 : 1. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य की विकास परंपरा

2. राजस्थानी लोक साहित्य एवं संस्कृति का आधार

राजस्थानी भाषा एवं साहित्य.

प्रथम इकाई – राजस्थानी भाषा की विकास परंपरा, वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश राजस्थानी

द्वितीय इकाई – राजस्थानी बोलियां–विभिन्न बोलियां क्षेत्र एवं विशेषताएं

तृतीय इकाई – राजस्थानी व्याकरण

चतुर्थ इकाई – राजस्थानी साहित्य प्राचीन एवं पूर्वमध्यकाल (गद्य एवं पद्य परंपरा)

पंचम इकाई – उत्तरमध्यकाल से आधुनिक काल (गद्य एवं पद्य परंपरा)

- प्रायोगिक–हिन्दी, हिन्दी से राजस्थानी में अनुवाद का अभ्यास

प्रथम पत्र अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया
2. History of Rajasthan Literature : Dr. H.L. Mahishwari
3. राजस्थानी भाषा और उसकी बोजियां : डॉ. देव कोठारी
4. राजस्थानी साहित्य का आदिकाल : (सं0) डॉ. नारायण सिंह भाटी
5. राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल : सं. डॉ. नारायण सिंह भाटी

प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न–पत्र

राजस्थानी लोक साहित्य एवं संस्कृति

प्रथम इकाई – लोकसाहित्य : परिचय, परिभाषा, तत्त्व एवं विशेषताएं

द्वितीय इकाई – राजस्थानी लोक साहित्य की विभिन्न विधाए

तृतीय इकाई – लोक संस्कृति : तत्त्व विशेषताएं, संस्कृति एवं सभ्यता में अंतर

चतुर्थ इकाई – धर्म, विश्वास, मान्यताएं, शकुन, लोक देवी–देवता

पंचम इकाई – लोक संस्कृति : विभिन्न स्वरूप एवं आयाम

- प्रायोगिक : लोकसाहित्य एवं संस्कृति से संबंधित विषय पर रिपोर्ट लेखन (लगभग–25 पृ. टंकित, राजस्थानी भाषा में)

द्वितीय पत्र अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. राजस्थानी साहित्य का सैद्धान्ति विवेचन : डॉ. सोहन दान
2. राजस्थानी लोक साहित्य : नानूराम संस्कर्ता
3. राजस्थानी के लोकदेवी देवता : डॉ. सुरेश सालवी

पाठ्यक्रम

द्वितीय सेमेस्टर

द्वितीय सत्र

सेमेस्टर–2 : 1. राजस्थानी भाषा दक्षता

2. (अ) राजस्थानी संत साहित्य परंपरा

(ब) राजस्थानी जैन साहित्य परंपरा

प्रथम–प्रश्न पत्र

राजस्थानी भाषा दक्षता

प्रथम इकाई – राजस्थानी भाषा की सामान्य विशेषताएं

द्वितीय इकाई – राजस्थानी भाषा की सामान्य व्याकरणिक विशेषताएं, प्रमुख अलंकार एवं छंद

तृतीय इकाई – तद्भव शब्द, तत्सम एवं देशज शब्द, अनुवाद हिन्दी से राजस्थानी, राजस्थानी से हिन्दी

चतुर्थ इकाई – आवेदन पत्र, सरकारी पत्र, लेखन–प्रारूप लेखन

पंचम इकाई – राजस्थानी भाषा में निबंध लेखन

- प्रायोगिक अभ्यास : राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति इतिहास से संबंधित विषयों में से किसी एक विषय पर रिपोर्ट प्रस्तुति (राजस्थानी भाषा में–25 पृ.)

द्वितीय सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न–पत्र

(अ) राजस्थानी संत साहित्य परंपरा

प्रथम इकाई – राजस्थानी जनमानस में भक्ति की अवधारणा–सगुण स्वरूप एवं विशेषताएं एवं निर्गुण : भक्ति स्वरूप एवं विशेषताएं

द्वितीय इकाई – राजस्थानी निर्गुण साहित्य परंपरा–परिस्थितियां, प्रवृत्तियां.

तृतीय इकाई – प्रमुख संत एवं संत संप्रदाय

चतुर्थ इकाई – संत साहित्य प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार

पंचम इकाई – राजस्थान के संतो का भक्ति–दर्शन, साहित्यिक, सामाजिक एवं सास्कृतिक अवदान

प्रायोगिक अभ्यास

किसी एक संत, संत सप्रदाय अविा संत साहित्य पर रिपोर्ट लेखन। (राजस्थानी भाषा में)

अथवा

(ब) राजस्थानी जैन साहित्य परंपरा

प्रथम इकाई – राजस्थानी जैन साहित्य परंपरा–विभिन्न पंथों, सम्प्रदायों और धड़ों की राजस्थानी साहित्यिक रचनाएँ

द्वितीय इकाई – प्राचीन एवं मध्यकालीन जैन रचनाओं की रूप परंपरा : रास, रासो, फागु, विलास, विवाहलो, बारामासा, टीका, टब्बा, बालावबोध, संधि, ढाल, चैत्यपरिपाटी

तृतीय इकाई – तेरापंथ के प्रमुख राजस्थानी रचनाकार

चतुर्थ इकाई – तेरापंथ की राजस्थानी रचनाएं–गद्य एवं पद्य

(1) मौलिक रचनाएं (2) अनूदित रचनाएं

पंचम इकाई – तेरापंथ का राजस्थानी साहित्य को अवदान

अभ्यास रिपोर्ट लेखन, तेरापंथ के किसी एक रचनाकार के व्यक्त्वि से संबंधित रिपोर्ट लेखन लगभग 25 पृ. राजस्थानी भाषा में।

अप्रस्तावित ग्रंथ